Class – T.D.C. Part III

Paper – V (धर्म-दर्शन)
(Philosophy of Religion)

Topic – आत्मा की अमरता
(Immortality of Soul)

डॉ० पूनम शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
दर्शनशास्त्र विभाग
आर० एन० कॉलेज

शरीर का गुण विस्तार है तथा आत्मा का गुण विचार है। आत्मा का स्वरूप ही चेतना से युक्त है। यह शरीर से पूर्णतः स्वतंत्र है। शरीर की मृत्यु के साथ आत्मा की मृत्यु नहीं होती। जर्मन विचारक लाइबनित्ज ने चरम सत्ता (आत्मा) को चिदणु (Monad) कहा है जो अविनाशी है। ये चिदणु संख्या में अनेक हैं तथा सभी क्रमिक रूप से श्रृंखला में आबद्ध रहते हैं। सर्वोच्च चिदणु (Monad of Monads) को उन्होंने ईश्वर माना है। उनका कहना है कि यदि इन चिदणुओं को क्रियाशील माना जाये, तो इनके बीच एक खाई बन जाएगी जो असंगतिपूर्ण होगा। इसलिए इन चिदणुओं का स्थायी होना अनिवार्य है। प्रत्ययवादी विचारकों में मैक्टागार्ट (Mactaggart) ने चरम सत्ता को निरपेक्ष (Absolute) कहा है। समाज के विभिन्न सदस्यों की भाँति निरपेक्ष में अनेक आत्माएँ होती हैं जो आत्म-परिपूर्ण (Self-Sufficient) एवं परिवर्तनरहित हैं। जर्मन दार्शनिक कान्ट (Kant) ने नैतिक युक्ति के आधार पर आत्मा की अमरता को प्रमाणित करने का प्रयास किया है। उनका कहना है कि मनुष्य कर्तव्य-चेतना से प्रेरित होकर कर्म करे एवं "निरपेक्ष आदेश" का पालन करे, तभी नैतिक पूर्णता की प्राप्ति हो सकती है। किन्तु इच्छाओं एवं वासनाओं को एक जन्म में नियन्त्रित कर नैतिक पूर्णता को प्राप्त करना सहज नहीं है, इसके लिए आत्मा की अमरता को स्वीकार करना आवश्यक है।

आत्मा की अमरता के सम्बन्ध में कुछ दुर्बल युक्तियाँ भी दी गयी हैं। कुछ विचारकों का मत है कि ~~आत्मा~~ आत्मा की अमरता के विचार से कार्य करने में प्रेरणा मिलती है तथा यह एक सार्वभौम विचार है। इससे आत्मा की अमरता सिद्ध होती है। कुछ विचारकों

(जैसे— विलियम जेम्स) का मानना है कि हमारे अन्दर अमरत्व में विश्वास की भावना पायी जाती है। ऐसे विश्वास के नष्ट होने पर संशयवाद को स्वीकारना होगा।

अमरत्व के विरुद्ध भी अनेक प्रकार की युक्तियाँ दी गयी हैं। इनमें सबसे प्रमुख युक्ति है कि आत्मा के अस्तित्व का प्रत्यक्ष नहीं होता है। इसके अभाव में मृत्यु के बाद जीवन या पुनर्जन्म का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता। प्राकृतिक नियम के आधार पर भी आत्मा के अस्तित्व का खण्डन किया गया है। इसके अनुसार प्रत्येक वस्तु का आरम्भ होता है, तो उसका अन्त होना आवश्यक है। इसलिए आत्मा का जन्म होने पर उसका विनाश आवश्यक है। एक अन्य तर्क में कहा गया है कि यदि सभी आत्माएँ अमर हों, तो उन्हें रहने के लिए स्थान का अभाव होगा। कुछ विचारकों ने कहा है कि अमरता की भावना मानव के स्वार्थ पर आधारित है। मानव स्वयं अमर होना चाहता है, इसलिए उसकी भावना है कि आत्मा अमर है।

ह्यूम ने आत्मा की अमरता के सन्दर्भ में दी गयी तत्त्वमीमांसीय युक्ति का खण्डन करते हुए कहा है कि यदि आत्मा अमर है, तो उसका अस्तित्व हमारे जन्म के पूर्व भी रहा होगा। किन्तु वर्त्तमान में उसका कोई अर्थ नहीं रह जाता और न ही भविष्य में रहेगा। पुनः उन्होंने यह भी प्रश्न उठाया है कि क्या पशुओं की आत्माएँ भी अभौतिक एवं अमर होती हैं? इसीप्रकार उन्होंने नैतिक युक्ति का खण्डन करते हुए कहा है कि यह ईश्वर की न्यायशीलता से जुड़ा है। इसके अनुसार ईश्वर बुरे लोगों को दण्डित करता है तथा भले लोगों की रक्षा करता है। ह्यूम ने यह कहा है कि ईश्वर में न्यायशीलता के गुण हैं, इसका आधार क्या है? उन्होंने माना है कि ईश्वर के प्रति ये विचार केवल पूर्वमान्यता पर आधारित

हैं। उन्होंने नैतिक युक्ति का खण्डन करते हुए कहा है कि इस
विश्व में सब कुछ परिवर्तनशील है। फिर किस युक्ति या
साद्दृश्यानुमान के आधार पर आत्मा के अस्तित्व को अमर
मान लिया जाये, जबकि किसी ने उसे देखा न हो या किसी
भी देखी गयी वस्तु के साथ उसकी समानता न हो। इसप्रकार
विभिन्न तर्कों के माध्यम से ह्यूम ने अमरत्व के विचार
का खण्डन किया है।

बर्ट्रेण्ड रसेल ने 'मन-शरीर निर्भरता युक्ति'
(Mind-body dependence argument) के आधार पर अमरता
के विरुद्ध तर्क उपस्थित किये हैं। मानसिक शोध से यह पता
चलता है कि मस्तिष्क अमर नहीं है। उनका कहना है कि
शारीरिक जीवन के समाप्त होने पर मानसिक जीवन भी समाप्त
हो जाता है। इसलिए मृत्यु हो जाने पर जीवित शरीर की
संगठित ऊर्जा का विघटन हो जाता है। ए० जे० एयर जैसे
तर्कीय प्रत्यक्षवादी ने अमरत्व से जुड़े वाक्यों को अनुभव के
जगत से परे बतलाया है। इसलिए इसके सम्बन्ध में
सत्यता या असत्यता का ज्ञान नहीं होता। एन्टनी फ्ल्यू ने
कहा है कि शरीर के नाश हो जाने के बाद व्यक्तित्व का
बना रहना अस्पष्ट है। वस्तुतः 'शरीररहित व्यक्ति' की बात का
अर्थ स्पष्ट नहीं है।

इसप्रकार देखा जा सकता है कि आत्मा की अमरता
के सन्दर्भ में पक्ष एवं विरोध में कई प्रकार के तर्क दिये गये हैं।
इसे तर्क के द्वारा प्रमाणित करना कठिन है। अमरत्व के
विचार का आधार विश्वास है। यह विचार जन्म एवं मृत्यु से
परे है तथा दिक् एवं काल की सीमा में बँधा हुआ नहीं है। मृत्यु
की वैज्ञानिक व्याख्या में आत्मा के विचार का स्पष्टीकरण नहीं
हो पाता। अमरता की अवधारणा धार्मिक विश्वास के दायरे
में आती है। यह विचार धर्मपरायण व्यक्ति के लिए प्रेरणा,
ऊर्जा एवं उत्साह का स्रोत है। इसलिए जब तक धर्म का
अस्तित्व रहेगा, अमरत्व की भावना जीवित रहेगी।

——— X ——— X ———